*अध्ययन सामग्री

विषय- हिन्दी

स्नातक प्रतिष्ठा(खण्ड-3)

प्रश्न पत्र- पंचम (इतिहास)

प्रयोगवाद और नई कविता

पदनाम- डॉ स्मिता जैन

एसोसिएट प्रोफेसर

हिंदी विभाग

एच डी जैन कॉलेज, आरा*

Scanned with CamScanner

प्रयोगवाद और नई कविता

प्रयोग तो प्रत्येक युग के होते आए हैं, किन्तु प्रयोगवाद उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया है जो कुछ नये बोधों, संवेदनाओं तथा उन्हें प्रेषित करनेवाले शिल्पगत चमत्कारों को लेकर शुरू-शुरू में 'तार-सप्तक' के माध्यम से सन् 1943 में प्रकाशन-जगत में आयी और जो प्रगतिशील कविताओं के साथ विकसित होती गयी तथा जिका पर्यवसान नई कविता में हो गया।

प्रमुख कवि —

- शमशेर बहादुर सिंह
- नरेश मेहता
- नेमिचन्द्र जैन
- रामविलास शर्मा
- गजानन-माधव मुक्तिबोध

हिन्दी के प्रयोगवाद का जन्म साधारणतः सन् 1943 में प्रकाशित एक काव्य संग्रह 'तार-सप्तक' से माना जाता है। उसके सम्पादक अज्ञेय जी। उसमें निम्नलिखित सात कवियों की कविताएँ संग्रहीत हैं —

(1) गजानन माधव मुक्तिबोध
(2) नेमिचन्द्र जैन
(3) भारत-भूषण अग्रवाल
(4) प्रभाकर माचवे
(5) गिरिजा कुमार माथुर
(6) डा० रामविलास शर्मा
(7) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय

इसमें हुए नये प्रयोगों को देखकर ऐसे एक प्रकार के प्रयोगवादी संग्रह मान लिया गया था। किन्तु पहले सप्तक की भूमिका को लेकर इन कवियों ने विद्रोह किया तब अज्ञेय ने सन् 1951 में 'दूसरा सप्तक' सम्पादित और प्रकाशित किया। उसमें निम्न सात कवि सम्मिलित थे —

(1) भवानी प्रसाद मिश्र
(2) शकुन्तला माथुर
(3) हरिनारायण व्यास
(4) शमशेर बहादुर सिंह
(5) नरेश कुमार मेहता
(6) रघुवीर सहाय
(7) धर्मवीर भारती।

शमशेर बहादुर सिंह, भवानी प्रसाद मिश्र आदि नवीन प्रयोगों के मोह से ग्रस्त होते हुए भी विचारों से प्रगतिवादी थे। परन्तु फिर भी इस संग्रह में प्रयोगवाद का रूप

अधिक स्पष्ट और गहरा था। वस्तुतः इसी संग्रह को पहला प्रयोगवादी संग्रह मानना चाहिए।

इसके उपरान्त सन् 1959 में 'तीसरा सप्तक' अज्ञेय ने संग्रहीत और प्रकाशित किया, जिसमें

- प्रयागनारायण त्रिपाठी
- कीर्ति चौधरी
- मदन वात्स्यायन
- केदारनाथ सिंह
- कुँवरनारायण
- विजयदेवनारायण साही और
- सर्वेश्वरदयाल सक्सेना।

प्रयोग के कुविस

की रचनाएं संग्रहीत थीं। ये सभी कवि प्रयोगवाद के कट्टर समर्थक और प्रचारक थे।

परन्तु 'दूसरा सप्तक' के प्रकाशन के उपरान्त अज्ञेय द्वारा किया जानेवाला प्रयोगवाद का नेतृत्व खतरे में पड़ने लगा था। इस क्रान्तिकारी विचारधारा के अन्य विचारक और साहित्य सर्जक प्रयोगवाद की नई - 2 धारणा और विश्लेषण कर अज्ञेय का विरोध करने लगे थे। इस समय तक जागरूक आलोचकों द्वारा की जानेवाली प्रयोगवाद की कटु आलोचना ने प्रयोगवाद शब्द को काफी बदनाम कर दिया था इसलिए प्रयोगवाद के समर्थकों ने इस नाम को त्याग कर 'नई कविता' ना

अपना लिखा और सन् 1954 में डा० जगदीश गुप्त के सम्पादन में 'नई कविता' शीर्षक से नवीन प्रयोगवादी कवियों का अर्द्ध-वार्षिक संकलन प्रकाशित हुआ।

नयी कविता —

'नयी कविता' भारतीय स्वतंत्रता के बाद लिखी गयी उन कविताओं को कहा गया, जिनमें परम्परागत कविता से आगे बढ़े भावबोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नये मूल्यों और नये शिल्प-विधान का अन्वेषण किया गया।

धर्मवीर भारती — अन्धा युग
धर्मवीर भारती — कनुप्रिया और
कुँवर नारायण — आत्मजयी'

इस युग की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं।

अज्ञेय —

'तार-सप्तक' की कविताओं के साथ अज्ञेय की नयी काव्य-यात्रा प्रारंभ होती है जो बाद में 'इत्यलम' में संगृहीत दिखायी पड़ती है।

'साँप'
"दुःख सबको माँजता है"
आदि कविता

गिरिजाकुमार माथुर

उनकी भाषा के दो स्वरूप हैं —

"मंजीर" और "तार-सप्तक" में उनकी व्यक्तिगत अनुभूतियाँ हैं किन्तु

"नाश और निर्माण",

धूप के धान

"शिलापंख चमकीले"

में सामाजिक जीवन की अनुभूतियाँ और यथार्थ उभरते गये हैं।

गजानन माधव मुक्तिबोध

अपनी पूरी पीढ़ी में मुक्तिबोध का व्यक्तित्व विशिष्ट है। उस पीढ़ी और उसी से लगी हुई परवर्ती पीढ़ी के लगभग सारे महत्त्वपूर्ण कवि (अज्ञेय, गिरिजाकुमार माथुर, धर्मवीर भारती आदि) रूमानी कविता से अलग हटकर नया प्रयोग करने का प्रयत्न करते हुए भी रूमानी संवेदना और भाषा से मुक्त नहीं हो सके, किन्तु मुक्तिबोध एक ऐसे कवि हैं जिनका अनुभव जगत बहुत व्यापक है जो अपने परिवेश के जीवन से बहुत गहरे भाव से जुड़े हुए हैं। उनकी प्रगतिवादी दृष्टि, परिवेश-बोध, सामाजिक चिन्तन

और अनुभव वैविध्य को बल देती है। अतः कहा जा सकता है कि बाद के जीवन की बहुविध छवि को लेकर विकसित होनेवाली नई कविता के अग्रज कवि मध्ये अर्थों में मुक्तिबोध ही हैं।

'अँधेरे में'

'ब्रह्मराक्षस' कविताएँ उल्लेखनीय हैं।

चाँद का मुँह टेढ़ा है। (कविता-संग्रह - 1964)

भवानी प्रसाद मिश्र

ये सहज संवेदना के कवि हैं। 'कमल के फूल'

'वाणी की दीनता'

'टूटने का सुख'

'सतपुड़ा के जंगल'

'सन्नाटा'

'गीत फरोश'

आदि कविताएँ महत्वपूर्ण हैं।

शमशेर बहादुर सिंह

धर्मवीर भारती :—

'धर्मयुग' के सम्पादक हैं। भारती की काव्योपलब्धियाँ — 'अन्धा-युग', कनुप्रिया और 'सात गीत वर्ष' में दिखाई पड़ती हैं।

Scanned with CamScanner